सारांश

भूमिका

राग और रागों का वर्गीकरण यह संगीत के क्रियात्मक एवं शास्त्र पक्ष का अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय रहा है । राग को सिखने - सिखाने की प्रक्रिया में रागांग का विचार अनिवार्य है ऐसा अधिकतर विद्वानों का मत है, जिससे शोधार्थी भी पूर्णतः सहमत है । इसी कारण प्रचलित रागांगो में से भैरव और पूर्वी अंग के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए इन रागों के सन्दर्भ में एक नवीनतम विचार प्रस्तुत करना यह शोधार्थी का उद्देश्य है ।

अगर हम किसी राग की जानकारी का अभ्यास करे तो प्राथमिक रूप में हमें उस राग का वादी स्वर, संवादी स्वर, अनुवादी स्वर, ठाठ, गायन समय, आरोह अवरोह, वर्जित स्वर, शुद्ध - कोमल - तीव्र - स्वर आदि प्राप्त होते है । परन्तु राग की रचना मुख्य रूप से उसके आरोही - अवरोही चलन, राग वाचक विशेष स्वर संगतियो, स्वरों के विशिष्ट लगावो आदि से होती है । राग के इसी चलन में एक "विशिष्ट स्वर संदर्भ" समाविष्ट होता है जिसे स्व. पंडित नारायण मोरेश्वर खरे जी ने रागांग कहा है । इसी रागांग को केन्द्र में रखकर रागांग भैरव और रागांग पूर्वी के विश्लेषणात्मक अध्ययन से भैरव और पूर्वी अंग के रागों के संदर्भ मे विस्तृत जानकारी प्राप्त होने की कई सम्भावनाएँ है एसा शोधार्थी का मत है ।

रागों के संदर्भ में प्राप्त पुस्तकों में राग के संदर्भ में प्रारम्भिक माहिती, स्वर विस्तार, बंदिशें, आलाप - तान आदि अधिकर पाए जातें है । इस शोध - प्रबंध के द्वारा राग माहिती के साथ - साथ विद्वानों के मत, रागांग के आधार पर स्वर - विस्तारों एवं बंदिशों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है । इससे रागांग की दृष्टी से संगीत के विद्यार्थी विचार - मंथन के लिए अवश्य प्रेरित होंगे ऐसा शोधार्थी का मानना है। जिस प्रकार इन दो रागांगो का चुनाव शोधार्थी द्वारा किया गया है । इससे प्रेरणा

प्राप्त करते हुए अन्य रागांग जैसे काफी, कानडा, मल्हार आदि रागांग पर भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता है । यह शोध कार्य भविष्य के शोधार्थी के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकें इस उद्देश्य को भी ध्यान में रखकर यह शोध प्रबंध लिखने का प्रयास किया गया है ।

संगीत जगत में श्रोता भी एक महत्त्वपूर्ण घटक माना गया है । प्रस्तुत शोध प्रबंध के द्वारा शास्त्रीय संगीत के रागों को समझाने की एक सूक्ष्म द्रष्टि संगीत से जुड़े हुए समाज के हर वर्ग को प्राप्त हो, यह हेतु भी इस शोध प्रबंध से साध्य होगा ऐसा शोधार्थी का मानना है ।

थाट, राग और रागांग इन तीनों का एक दुसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है । इन तीनों का विचार करते हुए राग - वर्गीकरण पर नूतन विचार प्रस्तुत करने का इस शोध प्रबंध के माध्यम से शोधार्थी द्वारा एक विनम्र प्रयास किया गया है ।

१. राग - परिभाषाओं का अध्ययन

राग इस विषय पर काफी शोधकार्य किएँ गएँ है । कई शोध प्रबंधों, संगीत के प्राचीन ग्रंथों, संगीत शास्त्र की किताबों, लेखों आदि में राग की परिभाषा, उत्पत्ति आदि विषयों का लेखन हो चुका है । जाती गायन से राग के संबंध के विषय पर विद्वानों के मतो का अध्ययन इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा किया गया है ।

शोधार्थी द्वारा इस अध्याय में राग के संदर्भ में आधुनिक समय के कलाकार, विद्वान और ग्रन्थकारों के मतों को जानकर इस विषय को नवीन द्रष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है । कई सालो की साधना, अनुभव, चिंतन के फलस्वरूप विद्वानों को, कलाकारों को राग के संदर्भ में कुछ नए द्रष्टिकोण, नए विचार, नए ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस अध्याय में इन्ही विचारों का संकलन एवं विश्लेषण करते हुए राग को गहराई से समझने का प्रयास किया गया है । राग के संदर्भ में नए विचार, अनुभवों का

संकलन इस अध्याय में किया गया है, जो राग से रागांग को समझने में अत्यंत सहायक होगा ऐसा शोधार्थी का मानना है ।

२. राग वर्गीकरण पद्धतियाँ एवं रागांग पद्धति का अध्ययन

इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य रागांग पद्धति का विश्लेषण है । रागांग क्या है ? रागांग का महत्त्व क्या है ? रागांग पद्धति पर किन विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये है ? इन प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है । रागांग पद्धति के संदर्भ में विभिन्न विचारवंतो के मत एवं राग वर्गीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इन वियो को इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

३. रागांग भैरव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

यह इस शोध प्रबंध का महत्त्वपूर्ण अध्याय है, जो इस शोध - प्रबंध के मूल विषय को प्रस्तुत करता है । इस अध्याय में रागांग भैरव वाचक स्वर संगतियों को प्रस्तुत किया गया है । उसी रागांग भैरव का प्रयोग अन्य रागों में किस प्रकार किया जाता है इसका विश्लेषण किया गया है । रागांग को खोजने के लिए विभिन्न रागों के स्वर विस्तार, बंदिशे, ग्रंथो से प्राप्त उल्लेख आदि का अध्ययन करते हुए राग और रागांग का सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया है । राग, थाट और रागांग को ध्यान में रखकर राग वर्गीकरण का एक नवीनतम प्रयास इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा किया गया है ।

४. रागांग पूर्वी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

इस शोध प्रबंध का यह महत्त्वपूर्ण अध्याय है जो इस शोध - प्रबंध के मूल विषय

को प्रस्तुत करता है । इस अध्याय में रागांग पूर्वी वाचक स्वर संगतियों को प्रस्तुत किया गया है । उसी रागांग पूर्वी का प्रयोग अन्य रागों में किस प्रकार किया जाता है इसका विश्लेषण किया गया है । रागांग को खोजने के लिए विभिन्न रागों के स्वर विस्तार, बंदिशे, ग्रंथों से प्राप्त उल्लेख आदि का अध्ययन करते हुए राग और रागांग का सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयाग किया गया है । पूर्वी रागांग के उपांग श्री रागांग एवं श्री रागांग के उपांग गौरी के सम्बन्ध में भी माहिती को विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत किया है ।

५. रागांग भैरव एवं रागांग पूर्वी का तुलनात्मक अध्ययन

इस अध्याय में रागांग भैरव और पूर्वी का एक दुसरे से सम्बन्ध इस विषय पर शोधार्थी द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किये है । राग भैरव और पूर्वी के प्रस्तुतीकरण में रागांग वाचक स्वर संगतियों का प्रयोग को विद्वान कलाकारों के ध्वनिमुद्रण के आधार पर प्रस्तुत किया गया है । भैरव रागांग और पूर्वी रागांग वाचक स्वर संगतियों की तुलना भी इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा पस्तुत की गई है । कई राग ऐसे भी प्राप्त होते है जिन के नाम समान है परन्तु भैरव और पूर्वी दोनों अंगो से गाए जाते है । इनका उल्लेख इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है । जिन रागों में भैरव और पूर्वी रागांग वाचक स्वर संगतियों का मिश्रण पाया जाता है ऐसे राग का विशेष उल्लेख इस अध्याय में किया गया है ।

६. उपसंहार

इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा रागांग भैरव एवं पूर्वी के विश्लेषणात्मक अद्ययन से प्राप्त किये गए निष्कर्षो एवं तथ्यों की चर्चा की है । सभी अध्यायों में प्राप्त हुई महत्त्वपूर्ण जानकारियों की चर्चा की है । रागांग आधारित नवीनतम राग वर्गीकरण की

चर्चा इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा की गई है । संपूर्ण शोध प्रबंध की शोष प्रक्रिया से प्राप्त तथ्यों को सार रूप में इस अध्ययन में प्रस्तुत किया गया है ।

७. निष्कर्ष

राग हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत का महत्त्वपूर्ण घटक है । राग की कई व्याख्याओं के अध्ययन से स्पष्ट है कि राग को किसी एक व्याख्या के अंतर्गत सिमित करना कठिन है । राग को समझने एवं सिखने के लिए रागांग का विचार करना अत्यंत आवश्यक है ।

रागांग भैरव एवं रागांग पूर्वी के विश्लेषणात्मक अध्ययन से रागांग को आधार मानकर रागों का अध्ययन करने का दृष्टिकोण प्राप्त हुआ । अध्वदर्शक स्वर "मध्यम" का महत्त्व एवं कण प्रयोग से प्रतार्गेयत्व एवं सायंगेयत्व का सम्बन्ध स्पष्ट हुआ है । रागांग प्रयोग आधारित राग वर्गीकरण का नवीनतम विचार इस शोध प्रबंध में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।